Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017 RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

o"k 16 vad 09 30 flrEcj 2016 eY; 5 #i;s

प्रधान की कलम से

जन नायक - चौधरी देवीलाल

सद्भावना एवं सम्मान दिवस पर विशेष

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

''बड़े शौक से सुन रहा था जमाना,
तुम्ही सो गए दास्तान कहते-कहते''

आज भी लाखों लोगों की स्मृति में जीवित रहने वाले ताऊ देवीलाल विद्यार्थी जीवन में ही स्वतंत्रता संग्राम में कूद गए तथा जीवन पर्यंत संघर्षशील रहे। सदा कामगार, काश्तकार तथा किसान का साथ दिया और अन्याय के विरूद्ध लड़ाई लड़ी। वे सदा तन-मन-धन से जनता से जुड़े रहे। वे त्याग की प्रतिमूर्ति थे।

''सूरा सो पहिचानवो जो लरै दीनकी हेत। पुरजा-पुरजा कट मरै कबहू ना छारे खेत।।''

ताऊ देवीलाल का दिल और दिमाग गरीब, मजदूर किसान के लिए धड़कता था। उन्होने कर दिखाया कि उन्हे भी मिले जिनकी कोई नहीं सुनता - बुढ़ापा सम्मान पैंशन व विधवा पेंशन तथा अन्य जन कल्याणकारी योजनाएं उदाहरण हैं। उनकी नीतियों व निर्णयों को भारत सरकार ने दूसरे राज्यों में भी लागू किया। जीवन के अंतिम दौर के लिए उन्होने ग्रामीण क्षेत्रों में वृद्ध आश्रम स्थापित करने आरंभ किए। इससे पूर्व उन्होने समाज को जोड़े रखने हेतू ग्राम चौपाल को सुदृढ़ किया। ग्रामीण परिवेश के अनुरूप सरकंडे का फर्नीचर रखवाया ताकि गरीब कारीगर को भी रोजगार मिल सके, जिसका सुखद परिणाम भी निकला। यह फर्नीचर अमेरिकी बैठक में तथा पांच सितारा होटल में भी पहुंच गया। इस प्रकार उनकी सोच, कथनी, करनी प्रेरणादायक थी।

दुनिया के विकसित देशों में आम लोगों की भलाई एवं समाज कल्याण हेतू योजनाएं कई दशक से चली आ रही थी लेकिन भातरवर्ष में इस किस्म की योजनाओं की शुरूआत सर्वप्रथम केवल जन नायक ताऊ जी ने की थी, जिसमें सबसे अहम योजना वृद्धावस्था पैन्शन तथा किसाान कर्जा माफी की थी और तत्पश्चात इस किस्म की योजनाएं जन नायक चौ0 देवीलाल ने हर वर्ग के लिए शुरू की। उन्होने गरीब वर्ग की जच्चा हेतू सहायता, घुमंतू परिवारों के बच्चों की शिक्षा हेतू स्कूल हाजिरी पर एक रूपया तथा उनको लेखन सामग्री व वर्दी निशुल्क उपलब्ध करवाई। गरीब की बेटी की शादी के लिए 'कन्यादान' कन्या को भी सम्मान मिले ऐसी स्कीम लागू करवाना, समाज की बेटी बचाओ और बेटी पढ़ाओ योजना से ज्यादा कारगर थी। काम के बदले अनाज जैसी ग्रामीण विकास की योजनाएं, हरिजन चौपाल बनाने हेतू योजनाएं अपनी राज्य सरकार के सीमित साधनों के द्वारा ही शुरू की। यदि ग्रामीण भाई गांव की भलाई के लिए अपनी तरफ से कोई स्कूल अथवा औषधालय आदि बनवाने के लिए धनराशि इकट्ठा करके चौधरी साहब के आगे पेश करते तो उसी राशी को दोगुना और छात्राओं के स्कूल हेतू तीन गुना करके सरकारी कोष से ग्रांट की शक्ल में गांव के लिए दे देते। उनका मानना था कि भ्रष्टाचार एक कोढ़ से भी बुरा रोग है और जनता के बीच कहते थे - ''भ्रष्टाचार बंद, बिजली - पानी का प्रबंध।'' धरातल पर काम करके ''सरकार आपके द्वार'' प्रथा शुरू करवाकर प्रशासन को देहात में मेला लगाने को मजबूर कर दिया तथा वर्षो से रूके कार्य एक दिन में हल होने लगे क्योंकि जिला स्तरीय सभी विभाग गांव में ही पहुंचे होते तथा जिलाधीश व पुलिस कप्तान तुरंत अमल करवाते।

वे किसान के दुख से द्रवित हो उठते थे उदाहरणार्थ जब भी राह चलते कहीं भी फसल के ओलावृष्टि अथवा अन्य प्राकृतिक आपदा से हुए भारी नुकसान को देखते थे तो खेत किनारे खड़े होकर भावुक हो उठते थे और किसान, मजदूर के नुकसान को देखकर कई बार तो रो पड़ते थे। यहां तक कि कई बार राह चलते अपनी सरकारी गाड़ी रोककर किसी भी शोकग्रस्त परिवार के दुख में शामिल भी होते थे। किसान की उपज का उचित भाव मिले, फसल खराब होने पर उसकी भरपाई हो, किसान के खेत के साथ सरकारी भूमि पर लगे वृक्षों की छाया से हुए नुकसान की भरपाई के लिए आधी कीमत मिले, युवावर्ग को बेरोजगारी भत्ता, नौकरी हेतू जाने के लिए बसों में निशुल्क यात्रा, बिना गारंटी लघु उद्योग स्थापित करने हेतू ऋण की व्यवस्था इत्यादि अनेकों योजनाएं शुरू

'k"k i;t&2 ij

'k"k i`"B &1

की। वे गांव से भावनात्मक तौर पर जुड़े थे। वर्ष 1977-78 में प्रदेश में आई बाढ़ से देहात को बचाने हेतू उन्होने योजना शुरू की, जिसमें वे स्वंय कस्सी तसला उठाकर कूद गए। ग्रामीण जनता को स6मान मिले, पांचतारा होटलों में चौपाल स्थापित करवाई।

उनका मानना था कि ''लोकराज लोकलाज से चलता है।'' वर्ष 1978 में अमेरिका के राष्ट्रपति जिमी कार्टर भारत दौरे के दौरान गुड़गांव के करीब गांव दौलतपुर नसीराबाद देखने गए। वे भी किसान थे। चौ0 देवीलाल ने अपने संबोधन में कहा कि 'एक किसान दूसरे किसान का स्वागत करता है' तथा गांव का नाम बदलकर कार्टरपुरी रख दिया जिसमें ग्रामीणों की शान तथा मेहमान के लिए अतिथि सत्कार की भावना झलकती है। ताऊ देवीलाल, दूर दृष्टि, सज़्त मेहनत और दृढ़ निश्चय के लिए विज़्यात थे। सामाजिक वानिकी चौधरी देवी लाल की ही सोच थी। किसान को निशुल्क पौध दिलवाकर सामाजिक वानिकी की ओर प्रेरित किया तथा तकनीकी ज्ञान व निशुल्क पौध से बागवानी की ओर प्रेरित किया। मधुमज़्खी पालन, मिनी डेयरी, मुर्गी-पालन शुरू करवाए ताकि किसान अपनी आमदन बढा सकें तथा अपनी पारंपरिक खेती भी करता रहे। किसानों को शहरों तथा कस्बों में आढ़त की दुकान खोलने के लिए भी प्रेरित करते थे।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की तर्ज पर उनकी भी यह सोच थी कि इस देश में असली साम्राज्य उस समय स्थापित होगा जब देश की सता की बागडोर एक कामगार व किसान के हाथ में होगी। उनका विचार था कि देश के राष्ट्रपति की कुर्सी पर दलित व प्रधानमंत्री के पद पर किसान/कारगार को आसीन करना चाहते थे। स्व0 चौधरी चरण सिंह, श्री एच डी देवगौड़ा, स्व0 श्री वी पी सिंह व श्री चंद्रशेखर को प्रधानमंत्री के पद पर विराजमान किया। वास्तव में जन नायक महान तपस्वी व त्याग की मूर्ति थे ज़्योंकि सन 1989 में जब प्रधानमंत्री पद के लिए उनके नाम का सर्वसज़्मति से प्रस्ताव स्व0 श्री चंद्रशेखर द्वारा पेश किया तो उन्होने खचाखच भरे केंद्रीय सदन में विनम्रता से इंकार करते हुए प्रधानमंत्री पद के ताज को स्व0 श्री वी पी सिंह के सिर पर रख दिया जो कि पूरे विश्व में बेमिसाल त्याग का आज तक एक जीता जागता उदाहरण है। वे सता से बाहर होते हुए भी गरीब जनता के कल्याण के लिए उनकी न्यायोचित मांगों के लिए सदैव संघर्ष करते रहे और यह कहते थे कि ''मैं सता के गलियारों की बजाए अपने प्रिय सीधे साधे लोगों के साथ रहना अधिक पसंद करता हूं''। उनका यह कथन दीन बंधू सर छोटूराम के विचारों के अनुकूल है ज़्योंकि दीन बंधु भी सदैव यह कहा करते थे ''नहीं चाहिए मुझे मखमल के मरमरे, मेरे लिए तो मिट्टी का हरम बनवा दो।''

हरियाणा राज्य को प्रथम प्रांत का दर्जा दिलवाने में चौधरी देवीलाल का विशेष योगदान रहा है। उन्होने आल इंडिया हरियाणा एक्शन कमेटी गठित करके पंजाब सरकार व केंद्रीय सरकार के समक्ष भाषा तथा अन्य राजनैतिक आधार पर अलग प्रदेश के पक्ष में दलीलें पेश की और कड़े संघर्ष के बाद हरियाणा प्रांत को अस्तित्व दिलाने में सफ्लता प्राप्त की।

चौ0 देवीलाल ने अपने शासनकाल में सबसे पहले गरीब-मजदूरों, छोटे दुकानदारों व काश्तकारों के व्यावसायिक व कृषि ऋण माफ करके समाज के सभी वर्गों को राहत पहुंचाने का कार्यक्रम शुरू किया। इसके अतिरिक्त उन्होने काश्तकारों व छोटे दुकानदारों को बैंकों से सस्ते ज़्याज पर ऋण उपलज़्ध करवाने व कृषि के लिए बिजली, पानी, उतम बीजों, उर्वरकों को प्रचुर मात्रा में उपलज़्ध करवाने तथा प्राकृतिक प्रकोपों से फसल नष्ट होने पर किसानों व काश्तकारों को उचित मुआवजा दिलवाने की व्यवस्था करके कृषि व इससे संबंधित कार्यों पर आधारित लगभग 80 प्रतिशत ग्रामीण जन संया के जीवन स्तर को सुधारने का प्रयास किया। किसानों के ट्रै1टर पर लगाए जाने वाला टोकन टैज़्स बंद करके ट्रैज़्टर का चालान काटने से छुटकारा दिलाया। छः एकड़ भूमि वाले किसानों का मालिकाना (भू-राजस्व) माफ किया इसके इलावा गन्ने का सर्वाधिक मुल्य उन्ही की देन थी। जन नायक ने अपने शासनकाल तथा केंद्रीय कृषि मंत्री होते हुए किसान व कृषि मजदूरों के हित के लिए अनेकों लाभकारी योजनाएं निरंतर रूप से लागू करने के लिए केंद्रीय सरकार पर दबाव बनाए रखा।

गुमान नाम की कोई जीच उनके पास नहीं थी। उनकी जीवनशैली अत्यंत सादी व सरल थी। वे कहीं भी बैठ जाते, जो मिलता वहीं मिल-बांट खा लेते। यहां तक कि बतौर मुज़्यमंत्री सूर्यास्त होने पर गांव में अचानक किसी भी सार्वजनिक स्कूल, चौपाल या किसी के भी घर रात्री विश्राम के लिए रूक जाते थे। वे आलोचक को पसंद करते तथा अपने में सुधार लाने का प्रयत्न करते। दैनिक ट्रिज़्यून के संदीप जोशी को 'ताऊ बोल्या' के लिए सज़्मानित किया तथा यह दैनिक कोना जारी रखने के लिए कहा।

ग्रामीण जनता शिक्षित हो गांव-गांव में स्कूल स्थापित करवाना, स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने हेतू निशुल्क शिक्षा का प्रावधान ताऊ की ही सोच थी। गरीब तथा पिछड़े वर्गों के बच्चों के लिए निशुल्क शिक्षा, वर्दी, पुस्तकें तथा स्टेशनरी भी ताऊ ने ही शुरू की थी। भ्रूण हत्या रोकने हेतू प्रथम प्रयास ताऊ देवी लाल ने ही किया। उन्होने ऐसी कई योजनाएं लागू की जैसे कि पिछड़े वर्गों हेतू जच्चा-बच्चा की देखरेख के लिए (गोंद) की व्यवस्था, कन्यादान तथा स्त्री शिक्षा को बढ़ावा।

किसान की सुविधा के लिए गांव-गांव को पक्की सड़कों से जोड़ने का कार्य भी उन्होने ही किया ताकि किसान अपनी फसल जल्द से जल्द मंडी में पहुंचा सके तथा उसका उचित मुल्य प्राप्त कर सके। उन्होने छोटे-छोटे कस्बों में भी अनाज मंडियों की व्यवस्था करवाई। किसान को उसकी उपज का उचित दाम मिले इसके लिए वे सदा संघर्षरत रहे बल्कि यह उचित होगा कि संघर्ष ही उनका जीवन था। वे इसके लिए भी विज़्यात थे कि किसी कमी हेतू वे अपनी सरकार के विरूद्ध भी झंडा उठा लेते थे, उनका मत था कि 'लोकराज-लोकलाज से चलता है।' एक बार आलू की कीमत इतनी गिर गई कि किसान को उसकी खुदाई भी मंहगी पड़ी तब किसानों ने आलू की खेती को खेत के बीच ही जुताई करने को अधिमान देना शुरू कर दिया। किसान मसीहा द्रवित हो उठा और सभी सभाओं में कहने लगा कि किसान की 120 दिन की कमाई खेत में गंवाई और

विद्वता, चतुराई और बुद्धिमानी की बात यही है कि मनुष्य अपनी आय से कम व्यय करे। –पंचतंत्र

50 पैसे किलो बिकने वाला वहीं आलू चिप्स बनकर 50 रूपये किलो बिक रहा है और लाल पैकट में पैक 200 ग्राम आलू टी वी पर आए विज्ञापन 'हमकों बिन्नीज मांगटा' पर उसी किसान का बच्चा घरवालों को मजबूर कर 10 रूपये में खरीदवा रहा है। इस सत्यवादिता का संसद तक में विरोध हुआ लेकिन जल्द ही इरान से आलू निर्यात का अनुबंध हुआ और वहां से लंबे-लंबे ट्रक आलू ले जाने के लिए सीधे देहातों में आ पहुंचे और कृतज्ञ किसान ताऊ देवीलाल की जय-जयकार कर उठा। आज पुनः आलु की दुर्गती हो रही है लेकिन आज चौधरी देवीलाल जैसा कामगार, काश्तकार व किसान हितैषी कद्दावर नेता भी नहीं है।

चौ0 देवीलाल का जीवन सदैव अशिक्षतों, अभागों, पिछड़े ग्रामीण वर्गों के लिए समर्पित रहा है। वे इनके कल्याण व उत्थान के लिए जीवन प्रयंत संघर्ष करते रहे। उनकी राजनीति का सीधा-साधा अर्थ था जिनके हक मारे गए हैं, वे उन्हे मिलें, जिनका शोषण हो रहा है वे शोषण मुक्त हों और जो धन के अभाव में पिछड़े हैं उन्हे उससे मुक्त करवाया जाए। छलकपट की राजनीति व भ्रष्ट राजनेताओं से उन्हे सज़्त नफ़रत थी इसलिए इन वर्गों के हितों के लिए सताा तक का परित्याग करके जनता जनार्धन को साथ मिलाकर संघर्ष करने को निकल पड़ते थे। अपने शासन काल में प्रदेश को स्वच्छ व पारदर्शी प्रशासन प्रदान करने के लिए गांवों में खुले दरबार (सरकार आपके द्वार) लगाकर जिला प्रशासन व पुलिस तंत्र को जनता जनार्धन के प्रति जबाबदेही बनाया। आज पुनः प्रशासनिक अधिकारी बेलगाम हैं और जनता परेशान है। मुज़्यमंत्री होते हुए भी घर-घर जाकर प्रत्येक व्यक्ति के दुख-सुख को जानने और उसकी समस्याओं को दूर करने की एक नई परंपरा स्थापित की। पुलिस प्रशासन को चुस्त दुरूस्त करने हेतू पुलिस कर्मियों के लिए उन्हे समयबद्ध तरक्की देना, पूरे राज्य में खेलों को बढ़ावा देने के साथ-साथ पुलिस विभाग के खिलाड़ियों को भी खेल जज़्त में अव्वल प्रदर्शन करने पर विशेष तरक्की देना व ए0एस0आई0 के पद तक खिलाड़ी कोटे से 3 प्रतिशत विशेष भर्ती करने का प्रावधान आदि अनेकों कल्याणकारी योजनाएं शुरू की। इससे भी बढ़कर अपने शासनकाल से पूर्व व शासनकाल के दौरान तथा बाद में भी संपूर्ण जीवन काल में उन्होने जय जवान, जय किसान के नारे को सदैव बुलंद रखा।

आज आवश्यकता है कि ताऊ देवीलाल की नीतियों व सिद्धांतों का अनुशरण किया जाए। इससे सरकारी नीति व कार्यशैली निर्धारण में मदद मिलेगी। चौधरी साहब की जन कल्याणकारी योजनाओं व निश्छल राजनीति से प्रेरणा लेकर प्रशासनिक व राजनैतिक तंत्र की विचारधारा को बदलने की नितांत आवश्यकता है ताकि ग्रामीण गरीब-मजदूर व किसान वर्ग के कल्याण व उत्थान के साथ-साथ स्वच्छ प्रशासन के लिए मार्ग प्रशस्त हो सके। वास्तव में ताऊ देवीलाल गरीब व असहाय समाज की आवाज को बुलंद करने वाले एक सशक्त प्रवक्ता थे इसलिए आज जन साधारण विशेषकर ग्रामीण गरीब-मजदूर, कामगार व छोटे काश्तकारों को अपने अधिकारों व हितों के प्रति जागरूक करने की आवश्कता है ताकि दलगत राजनीतिज्ञ व संबंधित प्रशासन इनके हितों की अनदेखी न कर सकें तभी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का एक स्वावलंबी व स्वस्थ ग्रामीण समाज का सपना पूरा किया जा सकता है। अतः एक उदार हृदय एवं महान आत्मा - ताऊ देवीलाल को लेखक सदैव नत मस्तक होकर प्रणाम करता रहेगा।

चौधरी देवीलाल के मुज़्यमंत्री काल में लेखक हरियाणा पुलिस (गुप्तचर विभाग) के प्रमुख रह चुके हैं।

डा0 महेन्द्र सिंह मलिक
आई.पी.एस., सेवानिवृत,
प्रधान जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला एवं
अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

Hard work and determination Ensure Success

The secret to happiness is hardship. Only through hard work and determination one can achieve one's dreams. Many persons, who have everything become lazy, whereas many whose lives have been spent in hardship become top professionals.

Here is a story about a young and poor student with an excellent academic record. He went for the interview fora managerial position in abigcompany. The chairman, learned afterthe interview that the father of the boy was no more and all the expenses of his education had been paid by his mother who worked as a maid.

The chairman said, "When you go home. clean your mother's hands and then see me tomorrow."

While cleaning, the youth noticed that his mother's hands had many bruises, which caused her immense pain on his touch. This was the first time the youth realized that these bruises were the price that his mother paid for his education. He kissed both her hands and he washed the remaining utensils lying in the kitchen. Next dav, he went to the office. Seeing tears in his eyes, the chairman, understood everything and said, "This is what I am looking for in my manager. I want to recruit a person who understands the value of hard-earned money and appreciates the help of others". I would like to end with a quote by late APJ Abdul Kalam: "Confidence and hardship are the best medicines to kill the disease called failure. It will make you a successful person.

ईश्वर, मूर्तियों में नहीं, आपकी भावनाओं में है और आत्मां आप का मंदिर है। –चाणक्य

भारत के स्वराज्य के मंत्रदाता एवं राष्ट्रवाद के जनक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

- प्रोफेसर डॉ. सुधा सिंह, एम.ए., पी.एच.डी.

"15 अगस्त, सन् 1947 को जिस स्वाधीनता यज्ञ की पूर्ति हुई, उसका प्रारम्भ महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा महानतम् प्रान्तिकारी राजा महेन्द्र प्रताप ने किया था और अन्तिम आहुति महात्मा गांधी ने दी। वास्तव में गणराज्य की प्राप्ति में समाप्त होने वाली राज्य क्रांति का बीजारोपण दयानन्द जी ने ही किया था।"
– चौधरी चरण सिंह, भारत के पूर्व प्रधानमंत्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती उन महापुरूषों में से है जिन्होंने आधुनिक भारत की आत्मा का निर्माण किया है। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जबकि दयानन्द जी ने कार्य एवं प्रचार आरम्भ किया, देश की दशा अत्यन्त सोचनीय थी। सन् 1857 की क्रांति की विफलता के बाद देश की सामान्य जनता का मनोबल गिरने लगा था, अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त नया वर्ग पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के रंग में रंगता जा रहा था और अंग्रेजों की दासता को राष्ट्रीय जीवन में एक वरदान मानने लगा था। उस समय स्वामी जी ने देश को राष्ट्रवाद का मंत्र दिया और सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्र में क्रान्तिकारी आदर्श प्रस्तुत किये। वास्तव में दयानन्द को ही आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद का जनक कहना उपयुक्त प्रतीत होता है।

दयानन्द सरस्वती के सार्वजनिक जीवन में ब्रिटिश साम्राज्य अपनी चरम सीमा पर पहुंच चुका था। इसाईयत सभ्यता भारत की पुरातन संस्कृति एवं सभ्यता पर आक्रमण कर रही थी। ब्रह्मसमाज के प्रसिद्ध नेता तथा समाज सुधारक श्री केशवचन्द्र सेन ईसाइयत द्वारा प्रभावित हो चुके थे। ऐसे समय पर दयानन्द भारत के एक प्रमुख मार्गदर्शक व राष्ट्रवादी नेता के रूप में उपस्थित हुए। भारतीयों की नैतिक तथा राजनीतिक दोनों ही दृष्टियों में सर्वथा दीन–हीन पराधीन और असहाय बना देने वाली पश्चिम से उठी ईसाईयत की लहर की पृष्ठभूमि को सामने रखकर ही दयानन्द के राष्ट्रवादी महत्व को समझा जा सकता है। यदि दयानन्द ने भारतीय साहित्य, विज्ञान, धर्म, इतिहास, भूगोल, सभ्यता आदि की सर्वश्रेष्ट विभूति को देशवासियों के सम्मुख पेश न किया होता तो आज भारत सही अर्थों में इंग्लैंड का एक उपनिवेश बनकर उसके पाकेट में पड़ा हुआ होता।

श्री सत्यवेद विद्यालंकार के शब्दों में "भारत में अंग्रेजी राज्य को कायम करने में जैसा प्रमुख भाग लार्ड क्लाइव और लार्ड मैकॉले का है वैसा ही देशवासियों के हृदयों में स्वाभिमान और स्वदेशाभिमान की उज्जवल भावना को जगाकर उनमें स्वतंत्रता और स्वाधिनता के लिये उत्कण्ठा पैदा करने में ऋषि दयानन्द का है।"

दयानन्द सरस्वती के हृदय में स्वदेश का, मातृभूमि का और आर्यावर्त का सर्वोपरि स्थान था। उनकी दृष्टि में 'स्वराज्य' का महत्व वेद से कहीं अधिक था। वे भारत के राजनैतिक पतन के पीछे भारतीयों के चरित्र के अभाव की प्रवृति को समझते थे। उनके राष्ट्रीय आयोजन का अनिवार्य आधार सामाजिक और राष्ट्रीय पुनुरूत्थान एवं उद्धार तथा चरित्र की शुद्धता थी। दयानन्द ने एक धर्म, एक धर्मग्रन्थ, एक ईश्वर, एक अभिवादन, एक भाषा, एक संस्कृति तथा मुक्ति आन्दोलन द्वारा समस्त भारतीयों का भारतीयकरण करके एक जातीयता अथवा एक राष्ट्रीयता का सन्देश देकर एकता के लिये एक सच्चा और वास्तविक प्रयत्न किया। भारत के पूर्ण हित और राष्ट्रीय उन्नति के संदर्भ में दयानन्द ने कहा कि "एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाये बिना भारत का पूर्ण होना दुष्कर है। सब उन्नतियों का केन्द्र स्थान एक्य है, यदि भाषा, भाव और भावना में एकता आ जाये, तो फिर भारत में आप ही आप सुधार हो जायेगा।"

दयानन्द ने ही सर्वप्रथम राष्ट्रीयता के लिये देशवासियों को आह्वान किया था। उनके द्धारा स्थापित आर्य समाज एक राजनीतिक संस्था नहीं थी और इसका क्रान्तिकारी और विप्लवकारी स्वभाव नहीं था, तो भी नवयुवक भारतीयों के मस्तिक में इसने राष्ट्रीय एवं देशभक्ति के भावों का संचार किया, जैसा कि आलोचक सर बैलेण्टाइन शिरोल ने लिखा है कि "वास्तव में दयानन्द का उद्देश्य विदेशी सत्ता के भय से मुक्त करना था।" अमेरिका के प्रसिद्ध योगी उण्डरोजेक्सन डेविस ने दयानन्द सरस्वती के वास्तविक महत्व को समझते हुये लिखा था कि, "मुझे एक आग दिखाई पड़ती है, जो सब ओर फैल रही है और प्रत्येक वस्तु को जला कर भस्म कर रही है। आर्य समाज की भट्टी में यह आगे पुरातन आर्य धर्म का स्वाभाविक पवित्र रूप में लाने के लिये सुलगाई गई है। भारत के एक परम योगी ऋषि दयानन्द

सरस्वती के हृदय में यह प्रकट हुई थी। जब यह आग सुन्दर भूतल पर नवजीवन का निर्माण करेगी, तब सर्वत्र सुख शान्ति और सन्तोष छा जाएगा" ऐशा समाज अथवा राष्ट्र का कायाकल्प करने के लिये जिस विद्रोह विप्लव या क्रान्ति की अग्नि सुलगाते है, उसे 'भट्टी' ही कहा जा सकता है। आर्य समाज के रूप में दयानन्द सरस्वती ने भारत में विप्लव और महाक्रान्ति की एक भट्टी ही सुलगाई थी। वे वास्तव में अपने देश का, समाज और राष्ट्र का कायाकल्प करना चाहते थे। इसी राष्ट्रीयता के महान उद्योग में स्वामी जी ने अपने को खपा दिया। वे अपनी मातृ–भूमि से बहुत प्रेम करते थे और उसको पराधिनता की जंजीरों से मुक्त कराना चाहते थे। उन्होंने पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति की तुलना में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की श्रेष्टता को सिद्ध किया। इससे भारतीय समाज का पुनरूद्धार हुआ और सांस्कृतिक जाग्रति उत्पन्न हुई। बाद में यही राष्ट्रीय भावना राजनैतिक क्षेत्र में दुष्टिगोचर हुई जैसा कि कर्नल ओलकोट ने लिखा है कि, "दयानन्द ने अपने अनुयायियों पर बड़ा भारी राष्ट्रीय प्रभाव डाला।" अतः इस बात की पुष्टि होती है कि दयानन्द जीवन के प्रत्येक क्षेत्र, समाज धर्म, संस्कृति तथा राजनीति में स्वदेशी के प्रथम तथा प्रबल समर्थक थे। इसलिये उन्हें भारतीय राष्ट्रवाद का जनक कहा जाता है।

दयानन्द सरस्वती 'स्वराज' के जन्मदाता थे। उनकी स्वराज्य कल्पना कितनी सुन्दर, उत्कृष्ट और विशुद्ध है, यह भी उनके लेखों और ग्रंथ से स्पष्ट है। आज से लगभग सौ वर्ष से अधिक पहले जब स्वामी दयानन्द ने स्वराज्य की चर्चा अपने ग्रंथो और लेखों में की तब स्वराज्य का विचार भी किसी के दिमाग में पैदा न हुआ था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीष्म पितामह डा0 दादाभाईनौरोजी ने 1906 में कांग्रेस अधिवेशन में इस शब्द का उच्चारण किया था। होमरूल आन्दोलन के दिनों में इस शब्द का कुछ खुलासा प्रयोग होना प्रारम्भ हो गया था। 1906 में लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन में 'स्वराज्य के जन्मसिद्ध अधिकार' होने की घोषणा करते हुये उसको प्राप्त करने का दावा प्रसिद्ध उग्रवादी राष्ट्रीय नेता लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने पेश किया था। यूरोप में राजनीतिक उन्नति का प्रगतिशील केन्द्र ब्रिटेन लोकतंत्र का आदर्श, ब्रिटिश संविधान, 'संविधानों का जनक' एवं ब्रिटिश संसद 'संसदों की जननी' कही जाती है। उस राष्ट्रीय संसद में भी प्रथम यह भाव प्रधान मंत्री सर हेनरी कैम्पबेल बैनरमेन ने प्रकट किया था कि अच्छा राज्य स्वराज्य का स्थान नहीं ले सकता। परन्तु उससे भी तीस वर्ष पहले स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने प्रख्यात ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में ओजस्वी शब्दों में लिखा था :–

"कोई कितना ही करें, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर माता–पिता के समान कृपा, न्याय एवं दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।"

दयानन्द जी ने एक मंत्र के अर्थ में लिखा है कि 'जबकि कर्मयोगी प्रजागण सबसे प्रथम संगठित होते है, तब स्वराज्य प्राप्त होता है, जिससे श्रेष्ठ दूसरा कोई राज्य नहीं है' इस अर्थ से दो भाव स्पष्ट प्रकट होते हैः प्रथम तो यह कि राष्ट्र या राजस्व के लिये संगठन प्रथम सोपान है। द्वितीय यह है कि 'स्वराज्य' का स्थान 'सुराज्य' नही ले सकता बल्कि अपना राज्य कुछ खराब भी क्यों न हों, वह परायों, विदेशियों और आक्रन्ताओं के सुराज्य यानी अच्छे राज्य से कहीं अच्छा है।

दयानन्द सरस्वती ने न केवल स्वराज्य का प्रतिपादन किया वरन् स्वराज्य–प्राप्ति और प्राप्त करके उसको स्थिर रखने के लिये भी गुणों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। सबसे उनमें मातृ–भूमि, मातृ–संस्कृति के लिये अटूट श्रद्धा होनी चाहिये और देश की स्वतंत्रता को व्यक्ति से ऊंचा समझना चाहिये। दयानन्द के मतानुसार भारत में राष्ट्रीय चरित्र को महत्व नहीं दिया जाता, यहां व्यक्तिगत चरित्र को ही समझा जाता है। व्यक्तिगत चरित्र का सम्बन्ध अपने शरीर और आत्मा से है। चरित्र का सम्बन्ध सम्पूर्ण राष्ट्र से है। जब तक इस तथ्य को न समझा जाएगा, देश पूरी तरह से खड़ा नहीं हो सकता।

स्वराज्य में मन्त्रदाता दयानन्द सरस्वती के पश्चात आर्य समाज ने स्वराज्य आन्दोलन को जो गति और शक्ति दी वह उसी का भाग था। ब्रिटिश शासकों को सबसे अधिक भय उन दिनों आर्य समाज से ही था, जैसा के बैलेन्टाइन शिरोल ने कहा कि "जहां–जहां आर्य समाज का जोर है, वहां राजद्रोह प्रबल है।" देश में पैदा हुई राजनैतिक जाग्रति और असन्तोष के पाप का टोकरा आर्य समाज के सिर फोड़ा जाता है।

भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, श्यामजी कृष्ण वर्मा, लाला लाजपतराय और स्वामी श्रद्धानन्द जैसे सैकड़ों बलिदानी वीर आर्य समाज ने दिये। इनके हृदय में स्वराज्य की भावनाओं का बीजारोपण करने वाले उनके गुरू स्वामी दयानन्द थे। यह सत्य है कि आचार्य दयानन्द ने जिस ने जिस स्वराज्य की नींव रखी थे, उसी को लोकमान्य तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, महात्मा गांधी और नेता जी सुभाष चन्द्र बोस आदि नेताओं ने आगे बढ़ाया। दयानन्द को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये लोक दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं भारत के पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह ने कहा था कि "15 अगस्त सन् 1947 को जिस स्वाधिनता यज्ञ की पूर्ति हुई, उसका प्रारंभ महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा महानतम क्रांतिकारी राजा महेंद्र प्रताप ने किया था और अन्तिम आहुति महात्मा गांधी ने दी। वास्तव में गणराज्य की प्राप्ति में समाप्त होने वाली राज्य क्रांति का बीजा रोपण दयानन्द जी ने किया था।"

जाट बिरादरी चौराहें पर

- जी.एस.

लापरवाही की कीमत जाट समाज भुगत रहा है। जिंदगी के हर मोड़ पर लाजमी चौंकसी न रहे तो आज की मारामारी में इंसान, घर–परिवार, गांव या समाज उलझ कर रहा जाता है। खेत में हर कदम पर बरती जाने वाली चौकसी का कायल किसान लापरवाही में मार खाता है। लापरवाही के साथ, दूसरी बिरादरी की तरह जाटों में भी सन् 1857–58 के बाद पनपे राज के एक पिछलग्गू तबके में गरूर और दूसरों को हीन समझने की बीमारी ने एक स्वस्थ समाज को अन्दर से चाट लिया है, जिस लोभ से ये मुगल काल में भी बचे रहे थे। लापरवाही के साथ–साथ अन्दर के इन पराये रोगाणुओं ने अब इन्हें वे दिन दिखा दिये जिसकी उम्मीद नहीं थी।

चलते–चलते अब जाट बिरादरी चौराहे पर खड़ी है। यह स्वयं जाट बिरादरी के लोगों को तय करना है कि आगे कौन दिशा में राह पकड़नी है; सिसकती बेचैन मौत या समृद्ध, चैन की जिंदगी। सन् 1857 में सत्ताधारियों ने इसे दोराहे से धकेल कर अपनी मर्जी के एक खास रास्ते पर ला कर खड़ा कर दिया था जिससे उसकी कठिनाइयां गहरी होती चली गयीं और अहसास भी नहीं हुआ कि यहां के खतरे क्या हैं। शासकों का हित तो सधा किन्तु किसान समुदाय की ताकत क्षीण होती चली गयी। शासक लुटेरे थे, हाथ में हथियार थे, 1857 की बगावत को दबा चुके थे। बाद में सन् 1947 से नये शासकों का हित भी यहां की इस जुझारू किसान प्रजाति को हांकने से ही पूरा होता था। उसे पूंजी लागत की खेती का गुलाम बना डाला जिससे उनकी मेहनत का अधिकतर फल सरमायेदारों के पास पहुंचता आ रहा है और जीवन में नित कलह, गैरबराबरी, दमन व बेचैनी भर गयी।

परिणामस्वरूप, बीते सत्तर साल में इस बिरादरी का अपना ताना–बाना बिखर कर अंदर से टूट गया है। घर–परिवार व गांव, उसका भाईचारा एवं उसकी तहजीब को मिटाने की साजिशें एक मुकाम पर पहुंच गयी हैं। खेती–किसानी तबाही के कगार पर है। जो हो, अब वह दोराहे से ऐसे चौराहे पर आ पहुंची है जो इसका भविष्य तय करने वाला है। इस चौराहे से एक गलत कदम का परिणाम उसकी हस्ती को मिटाने का काम कर सकता है। सोच लें, संभल कर दिशा तय करना स्वयं उसका अपना काम होगा। हालात का सही से जायजा ले लें।

बीते दो साल के घटनाक्रम पर क्रमवार ध्यान दिया जाये तो पता चलता है कि केंद्र व हरियाणा में एकछत्र सत्ता पर कब्जा हो जाने के बाद से मनुवादी आर.एस.एस. ने अपनी दूरगामी योजना पर काम आरंभ कर दिया है। उसने अपने दोस्त, दुश्मन छांट लिए हैं। एक–एक करके इन्हें पचलित करने की रणनीति है। फिलहाल उत्तर भारत में किसानों की एक कर्मठ जाट बिरादरी उसके निशाने पर चढ़ गयी है जो राजधानी क्षेत्र में खास दखल रखती है। अन्य किसान बिरादरियों के साथ क्षेत्र की कृषि भूमि पर इसका वर्चस्व है जिस पर कॉरपोरेट पूंजी, खासकर गुजराती पूंजी की निगाह गड़ी हुई हैं कि कैसे किसानों को बेदखल किया जाये। आरएसएस को खासकर इस बिरादरी का सभ्याचार और उसकी जुझारू विरासत पसंद नहीं है। जाट किसान को वह अपने रास्ते का रोड़ा समझने लगा है। सन् 2014 के लोकसभा चुनाव के दौरान ही ऐसी आशंका खड़ी हो गयी थी। भोले किसान समझ नहीं पाये थे कि उनका किस किस्म के खतरे से वास्ता पड़ गया है। याद रहे, किसान की औकात उसकी जमीन से बनती/बिगड़ती है। धरती को छींन कर किसान की औकात को खोखला करने का काम आरंभ हुआ है। पानी डालकर चूहे को अपने बिल से भगाने की तरह काम चालू है, उसके मूल पेशे को छुड़वाने की साजिश है। चक्रांत का पहला भाग यह है जिसे समझने की आवश्यकता है। फिर उसकी विरासत, उसका सभ्याचार निशाने पर है। इसे पलट कर जाट किसान को कर्मकाण्डी बनाने पर ध्यान है।

उत्तर भारत में किसान जमात, खासकर जाट, कभी मनुवाद के पैरोकार नहीं रहे, तब भी नहीं जब बौद्धों के कत्ल–ए–आम के बाद सनातन पंथियों का यहां वर्चस्व हो गया था। यह हम नहीं कर रहे हैं, इतिहास कहता है। संविधान सभा में हरियाणा क्षेत्र से एक सदस्य ने अंतरिम संसद में 22 सितंबर, 1951 को हिंदू कोड बिल पर बहस में भाग लेते हुए शासकों को दो टूक बता दिया था कि देश में ऐसे समय जब ब्रह्ममनिक (मनुवादी) कायदे कानूनों ने सारे समाज के रहने–सहने और रीति रिवाजों को अपने पंजे में बांध रखा था, पंजाब की जाट जाति ने, जिस जाति से मैं और सरदार बलदेव सिंह ताल्लुक रखते हैं, उस जाट जाति ने आज तक उस ब्रह्ममनिक रूल के सामने सिर नहीं झुकाया जिसे इस बिल की मार्फत पिछले दरवाजे से हम पर थौंपना चाहते हैं।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान अपनी स्थापना के बाद से ही आरएसएस ने ब्रिटिश शासन की छत्रछाया में देश के मुसलमानों को निशाने पर लेकर अपनी राजनीति आरंभ की थी। सन् 1857 के बाद यह हिंदू–मुसलमान का बंटवारा ब्रिटिश शासन को जिंदा रखने की नीति थी। बाद में, इस मनुवादी जमात ने सन् 1947 में ब्रिटिश शासन की समाप्ति पर ईसाई समुदाय को भी निशाने पर लिया। ब्रिटिश शासनकाल में इन्हें नहीं छूआ। एक समय पंजाब में सिखों को निशाने पर चढ़ाया। इस कड़ी में अब, जाट बिरादरी की रीढ़ को तोड़ने पर वह लग गयी है। उसकी धरती और खेती–किसानी आरएसएस व उसकी राजनीतिक जमात, भाजपा के निशाने पर आ गयी है। ये लोग चाहते हैं कि खेती का काम अब अडानी, अंबानी, टाटा करें और किसान शहरों का सस्ता मजदूर बने।

आरएसएस ने हरियाणा क्षेत्र के जाटों में पहली बार सन् 1947 की मारकाट के दौरान अपनी जगह बनानी आरंभ की थी।

जीवन की सार्थकता योग में नहीं है। उसकी सार्थकता अनुभव के द्वारा ज्ञान हासिल करने में है। –स्वामी विवेकानंद

देश के बंटवारे के बाद यहां के मुसलमानों को सबक सिखाने में आरएसएस ने मुस्लिम विरोध की आंधी खड़ी करके अनेक जाटों को अपने जाल में फंसाया था। तब भी, हरियाणा में उसकी पैंठ नहीं बन सकती थी। अब एकछत्र राज की ताकत पर वह यहां के ग्रामीण क्षेत्र को जीतने के अभियान पर है। पहली कड़ी में यहां के पंचायती राज संस्थाओं के लिए चुनाव प्रक्रिया में तबदीली करके घुसपैंठ की तैयारी हुई थी। उसकी निगाह उनके स्कूलों में लिपी–पुती गांव की युवा पीढ़ी को अपने हक में गांठने पर जमी हुई थी।

जाट बिरादरी के कुछ पेशेवर किस्म के नेतागण ने चालू ढर्रे पर मान लिया कि चुनाव में भाजपा की मदद करके कीमत लेना आसान होगा। वे थोक में भाजपा के पटकेधारी बन गये। सत्ता की राजनीति से यह मौकापरस्ती उन्होंने सीखी थी। भूमि अधिग्रहण अध्यादेश पर उठे बवाल के बीच में इसी लकीर पर चलकर ये नेता समझ बैठे थे कि उठे बवंडर में आरक्षण पर प्रधानमंत्री का आश्वासन बड़ी उपलब्धि मिल गयी है। वे जश्न के मूड में थे। सौदेबाजी की राजनीति को वे काबलियत मान बैठे थे। फरवरी माह में उठे आरक्षण आंदोलन के समय हालात का आदतन गलत आंकलन ले लिया गया जिसे आरएसएस व भाजपा ने बड़ी चालाकी से अपहरण करके अपना खूनी खेल खेला और हिंसा का दोष जाट बिरादरी के खाते में डाल दिया। यह जमात इस खेल की महारत रखती हैं जबकि वह राज में है और प्रचार की उस्ताद है, सम्भवत इन नेतागण को यह याद नहीं रहा। चोट खाई, बदनामी भी ली।

स्वतंत्र देश के कमेरे वर्ग की परेशानी है कि मेहनत के बावजूद अभाव में जीता है। उसके किसान की परेशानी है कि कमरतोड़ मेहनत के बावजूद भारी पक्षपात का शिकार है; ऊंची लागत और न्यूनतम बिक्री दाम वाले दो पाटों में उसे सत्ताधारियों ने सत्तर साल से पीस कर रख दिया है तो बचाव के रास्ते पर पत्थर रख दिये हुए हैं। सन् 1858 के बाद जिस तरह अंग्रेजों ने किया था कि किसान को आज्ञकारी नौकर बना कर उसकी आजाद फितरत को तबाह करके जी हजूरी सिखा दी, उसी तरह सन् 1947 के बाद इन नये शासकों ने देहात के स्वाभिमानी व आजादी पसंद किसान एवं उसके स्वावलंबी दस्कारों, सहयोगियों को लुटेरे धंधों अथवा नौकरी चाकरी के जी हजूरी वाले पेशों में फंस लिया है जिससे उसकी मौलिक संस्कृति को कायदे से तोड़ दिया जाए। दूसरी ओर, मानसिक क्लेश में फंसे इन लोगों को धर्म/कर्मकाण्ड में लपेटने पर तेजी से काम हुआ है। सन् 1991 में शिला पूजन से आरंभ करके कावड तक इन्हें ला छोड़ा है। उन्हें घंटी बजाकर मानसिक शांति की तलाश में रहने वाले जीव बनाया जा रहा है। पंडित के पतरे पर विश्वासी घर चलाने वाले जीव।

देख सकते हैं कि अब हरियाणा का किसान आर्थिक नाकेबंदी के साथ ही सामाजिक–सांस्कृतिक घेराबंदी के निशाने पर आ गया है। सबसे बड़ी बात है कि देश के कमेरों को बिना मेहनत धनवान होने के तिलस्मी जाल में फंसा लिया है। जिस मण्डी बैंक की रचना उसे हर घड़ी चूसने हेतु हुई थी, उसी का मुरीद बना दिया है। वह स्वावलंबी खेती की जगह पूंजी की ताकत पर खेती करने लगा है, अंततः जो उसकी मौत का पैगाम है।

इतिहास की यह सीख याद रखनी चाहिए कि मनुष्य की संस्कृति, सभ्याचार उसके काम से बनते/बिगड़ते हैं। जिसे गांव का सभ्याचार कहा जाता है, वह भाईचारा, मिलनसारी, आपसदारी, सहभागिता उस किसानी की देन है, जिस पर चलते हुए यहां का देहात इतने लंबे समय तक जिंदा रह सका। यह वही खाप क्षेत्र है जिसे तानाकशी स्वरूप अब कुछ चालबाज जाटलैण्ड कह कर पुकारते हैं, जहां एक दिन बराबरी एवं सहनशीलता के सिद्धांत पर बेहतरीन स्वःव्यवस्था वाली गणतांत्रिक प्रणाली विकसित हुई थी, जहां भाईचारा उसकी नसों में बसता था और जहां स्थाई नेतृत्व की गैरबराबरी वाली अवधारणा कभी नहीं पनप सकी थी, जैसा पराया ऐब अब है।

बीते सत्तर सालों में इन गुणों में जिस तरह की पराई संस्कृति वाला घुण लग सका इसका कारण वे पेशे हैं जिनका चलन सन् 1858 के बाद अंग्रेजों ने आरंभ किया था, जिन्हें अब अमीर बनने के लिए गांववासियों ने अपना लिया और शहरियों के बिछाये जाल में स्वयं जा फंसे हैं। घर के हर कोणे या छेद से इन रोगाणुओं को बीन बीन कर बटौडों की आग के हवाले करने से ही वह संस्कृति बच सकेगी, जिस पर जाट बिरादरी नाज करती आ रही है। याद रहे शहरियों को, उसकी पहरेदार जमात आरएसएस व भाजपा को न भाईचारा पसंद है, न खाप व्यवस्था। उनका भाईचारा कहीं बनता है तो निजी स्वार्थ तक सीमित होकर रहता है।

गांव का भाईचारा सहभागिता का है जहां दुख–दर्द साझे का है। मीडिया अब इन शहरियों, पूंजीधारकों का गुलाम है, सो प्रचार के इन उस्ताद लोगों से हर कदम पर खबरदार रहना ही विकल्प है। ग्रामीणों के लिए आदतन चौकस रहना ही बचाव का मार्ग बचता है। पेशा चुनते समय भी चौकसी चाहिए।

याद रखें कि सरकारें अब बिना अपवाद कॉरपोरेट पूंजी का औजार बन चुकी है, उनपर निर्भरता कोरी मूर्खता का निमंत्रण है। बाजार (मण्डी) व बैंकों से दूरी बनाकर स्वावलंबी बनें, तब कहीं खेती–किसानी व उसकी संस्कृति व सभ्याचार के फिर से पनपने की राह खुलेगी, तभी अपना गांव बचेगा, वरना सरकारों ने उन्हें सरमायेदारों के हित की खातिर मौत के मुंह में पहले ही डाल दिया हुआ है। लीपापोती बहुत हो चुकी है। जाट बिरादरी का संकट तभी मिटेगा। गांव की अन्य बिरादरियों के बीच भाईचारे की नींव तभी पक्की होगी, जब आपस में मालिक–मजदूर वाले पूंजी के रिश्तों की जगह सहभागीदार का रिश्ता लौट आयेगा। ग्रामीण भारत की जिंदगी, उसकी आबरू का प्रमुख सवाल इसी तरह का है। इसके लिए गांव के अपने सचेत मित्र आगे आयें। पूंजी के फंदे को काट कर खेती–किसानी को अपने विकास की धुरी बनाने पर बेसांस जुट जायें।

बुरी आदतों की कीमत दो बार चुकानी पड़ती है, एक बार जब आप उनके प्रभाव में आते हैं, दूसरी जब वह नुकसान पहुंचाती हैं। –अज्ञात

अन्तर्यात्रा

ध्यान योग से मानव शरीर का कायाकल्प

आज भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के कई देशों में ध्यान की ज्ञान रूपी रहस्यों पर वैज्ञानिकों ने शोध करना प्रारंभ कर दिया है। शायद वैज्ञानिकों ने यह जानना चाहा है कि मानव रूपी नश्वर शरीर जोकि पंचतत्व से बना है। इस शरीर में ऐसा क्या रहस्य छिपा है कि ध्यान योग के द्वारा मानव शरीर का कायाकल्प और हृदय परिवर्तन हो जाता है। पाठकगण पाएंगे कि बहुत बड़े धनवान के पास तमाम प्रकार के भौतिक आधुनिक सुख साधन के बाद भी उसे शांति नहीं है और दूसरे पक्ष में निर्धन के पास आधुनिक सुख साधन न होने से उसे शांति नहीं है यह दोनों पक्ष इस ध्यान के ज्ञान से जहां असीम शांति का अनुभव करते हैं, वहीं ऐसे ध्यानी जनों को मृत्यु से भय नहीं रहता तथा दुसरों को ज्ञान देने में समर्थवान हो जाते हैं।

यह कैसा रहस्य है इस ध्यान के पीछे की न तो साधक को कोई महंगी वस्तु खानी पड़ती है न कोई कीमती वस्त्र–आभूषण की जरूरत पड़ती न कोई महंगी आडम्बर युक्त दिखावे की जरूरत पड़ती है, तो मात्र शांत एकांत स्थान की आज के भागदौड़ के जीवन में मानव जितना सुखी सम्पन्न है दूसरे पक्ष में मानव दुखी, निर्धन, विपन्न है। दोनों पक्ष अशांत हैं। ऐसे अशांत मानव को शांति प्रदान करने हेतु संत महात्माओं ने बड़े–बड़े गुरुजनों से ध्यान जैसे लुप्त ज्ञान पर प्रकाश डालते हुए मानव की शांति के लिए रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्रों के माध्यम से सामूहिक रूप से शिविरों के माध्यम से सामूहिक रूप से शिविरों के माध्यम से अब गली मोहल्ले आदि में प्रचार कर रहे हैं।

लेकिन खेद तब होता है जब ध्यान के गुढ़ ज्ञान का रहस्य ध्यान साधकों को पूरी तरह से अवगत करा कर ध्यान के रंगों में रंग न दिया जाए, क्योंकि आंख मूंद कर सुख आसन पर बैठकर ध्यान और मन को कभी एकाग्र नहीं किया जा सकता, क्योंकि कई ध्यानी जनों से लेखक ने प्रत्यक्ष रूप से जानना चाहा कि आप कितने दिन से ध्यान कर रहे हैं तथा आपके ध्यान की एकाग्रता का लाभ कहां तक मिला तो ध्यान साधकों का कहना है कि ध्यान साधक तो कई वर्षों से करते आ रहे हैं, परंतु ध्यान की एकाग्रता प्रायः भंग हो जाती है और जैसे हमें ध्यान शक्ति की एकाग्रता का लाभ मिलना चाहिये वैसे नहीं मिल पा रहा जैसे ध्यान से संपर्क टूटता है वैसे हम भौतिक दुनिया में प्रवेश कर जाते हैं और दैनिक क्रियाकलाप में लीन हो जाते हैं, तो उक्त विषय बिन्दु का रहस्य विद्वान लेखक ने ध्यान के द्वारा जो स्वयं अनुभव किया है उस रहस्य को सरल भाषा में पाठक एवं साधकों के समक्ष प्रस्तुत किया है जिसे पाठक एवं साधक जन ध्यान योग का गूढ़ रहस्य जानकर सफलता के चरम बिन्दु पर पहुंचकर लाभ उठा सकते हैं और अन्य को मार्ग दर्शन कर सकने में समर्थवान हो सकते हैं।

सर्वप्रथम साधकजन यह जान लें कि मानव शरीर में दो प्रकार का मन होता है। एक चेतन मन अर्थात हमें दैनिक जीवन में होने वाली क्रियाकलाप सुख–दुख की सूचना देने वाला मन चेतन व जागृत मन कहलाता है। यह मन मानव की जगह रहने पर कार्य करता है। दूसरा अचेतन मन होता है यह मानव की निन्द्रावस्था में कार्य करता है इस अचेतन मन से मानव स्वपन देखता है और भविष्य में होने वाली शुभ–अशुभ घटना को मानव स्वपन में देखता है पर मानव अचेतन अवस्था में बोल नहीं पाता। इस चेतन–अचेतन मन को साधक तब भी अनुभव कर सकते हैं जैसे हमें कोई बात का निर्णय लेना हो तब एक मन बोलता है आप निर्णय ठीक लिए है तत्पश्चात दूसरा मन बोलता है आपके द्वारा ऐसा निर्णय लेना उचित नहीं है तब साधक जन ध्यान के द्वारा अचेतन मन को जगाए, क्योंकि चेतन मन का निर्णय भौतिकता की ओर ले जाता है।

अचेतन मन अध्यात्म और सच्चाई की ओर ले जाता है। मानव शरीर में मन रूपी घोड़े को लगाम रूपी इंद्री को वश में करना ठीक उसी प्रकार है जैसे हम नदी, तालाब के किनारे बैठें हों और हवा के द्वारा नदी तालाब में लहर रूप तरंग उठता गिरता है और हम सोचते हैं कि लहर स्थिर कब होगा तो मानव का मन जब जागृत अथवा चेतन अवस्था में रहता है तब उसका मन घर परिवार समाज राष्ट्र के दैनिक होने वाले क्रिया पर जाता है जैसे हमें कमाना है परिवार का भरण पोषण करना है अचानक कहीं जाना है कोई बीमार हो गया है।

पति–पत्नी में कलह व ज्यादा लगाव हो गया है विभिन्न प्रकार से सुखों का भोग करना है आदि जब साधक ध्यान करने बैठता जरूर है परंतु भौतिक सुख रूपी तरंग से साधक पूर्ण मुक्त नहीं हो पाता तो पूर्ण सफलता की आशा कैसे करें। जिस प्रकार हवा न चलने से नदी तालाब में लहर नहीं उठता पूर्ण स्थिर हो जाता है। ठीक उसी प्रकार से साधक का मन भौतिक सुख रुपी तरंग से जैसे मुक्त होता है वैसे वह ध्यान साधना के प्रथम बिन्दु में प्रवेश कर जाता है। साधक जनों को यह भी भली भांति जान लेना चाहिए कि मानव शरीर की रचना पंचतत्व से निहित है और मानव शरीर में बहत्तर सौ नस नाड़िसों का जाल फैला हुआ है इस सम्पूर्ण नस नाड़ी का संबंध मानव के मस्तिष्क से है। जब साधक ध्यान के द्वारा भौतिक बातों से मुक्त होकर ध्यान से शून्य पर आ जाता है तब शरीर के सभी नस नाड़ी स्वतः स्थिर होकर मस्तिष्क को ऊर्जावान बना देता है। तब साधक को अनुभव होने लगता है कि माथे के बिन्दु स्थान से रोशनी निकलने वाली हो गई।

भौतिक सुख की कामना बिल्कुल मन में नहीं रहा। इस प्रकार साधक का अगर ध्यान यात्रा जारी रहा तो साधक जैसे ध्यान में बैठेगा उसका मन उतना एकाग्र हो जाता है कि अगल–बगल चाहे जितना शोरगुल क्यों न हो उसे सुनाई नहीं पड़ता। तथा ध्यान की अवस्था में साधक के किसी अंग पर चोट भी लग जाए तो, उस अवस्था में याद नहीं रहता। तथा साधक अपने साधना के बल पर दूर दराज की घटना को देख सकने में तथा भूत भविष्य वर्तमान की बातें जानने में समर्थवान हो जाता है। और साधक मृत्यु जैसे भय से मुक्त हो जाता है और ऐसे साधक का नाम यश कीर्ति दूर–दूर तक फैलता जाता है। जब तक ध्यान साधकों को उल्लेखित रहस्यों का ज्ञान न हो तब तक साधक ध्यान साधना करता जरूर है परंतु पूर्ण सफल नहीं होता। ध्यान साधना तभी सफल कहा जा सकता है जब उक्त बातों का अनुभव साधक को मिलने लगे–अन्यथा जीवन भर ध्यान साधना का लाभ नहीं मिल पाता।

वृक्ष अपने सिर पर गर्मी सह लेता है परंतु अपनी छाया से औरों को गर्मी से बचाता है। –कालीदास

जनहित में प्रकाशनार्थ

कैश, कास्ट, कम्युनल और क्रिमिनल है आज की राजनीति, वर्तमान परिपाटी को बदलना जरूरी

– प्रोफेसर दुर्गपाल सोलंकी

''भारतीय राजनीति का चरित्र अब असहिष्णु हो गया है। राजनीति में अब विरोधी नहीं रहे। अब या तो शत्रु होते हैं या फिर, जबर्दस्त समर्थक। देश की लोकशाही में आज योग्यता बाधा है। योग्यता और प्रखरता को खतरे की तरह लिया जाता है। नेता के मायने 'कैश' 'कास्ट' 'कम्युनल' और 'क्रिमिनल' में बदल गये हैं। जब राजनीति की गुणवता नेता पर लगे मुकदमों, घोटालों व सीबीआई जांचों में देखी जाती है। राजनीति में बार–बार समझौते करने पड़ते हैं और यही बड़ी राजनीति की वर्तमान परिपाटी को बदलना आज की महती जरूरत है जिसमें युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण हो''।

उक्त विचार शिक्षाविद्–राजनीतिक विचारक, विश्लेष्क एवं संसदीय चुनाव विशेषज्ञ प्रोफेसर डा. दुर्गपाल सिंह सोलंकी ने ''भारतीय राजनीति में उत्तर प्रदेश की भूमिका'' विषय पर सर छोटूराम स्मृति शिक्षण कक्ष में संपन्न विचार संगोष्ठी में व्यक्त किए।

प्रो. दुर्गपाल सिंह ने कहा कि प्रदेश में महान क्रांतिकारी राष्ट्रपति राजा महेन्द्र प्रताप, पं. जवाहर लाल नेहरू, रफी अहमद किदवई, लाल बहादुर शास्त्री, गोविंद बल्लभ पंत, चौधरी चरण सिंह, डा. हृदयनाथ कुंजरू, बाबू गुलाब राय, प्रकाश वीर शास्त्री, डा. संपूर्णानंद, आचार्य नरेंद्र देव, राजनारायण, वीरेंद्र वर्मा, डा. ऊधम सिंह, पं. दीन दयाल उपाध्याय, ठा. ब्रजराज सिंह, पं. कृष्ण दत्त पालीवाल, पं. मदन मालवीय, शिब्बनलाल सक्सैना जैसे नेता दिए हैं। मुंशी प्रेम चंद, सुमित्रानंदन पंत, डा. राम विलास शर्मा, महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', हरिवंश राय बच्चन, राजा लक्ष्मण सिंह, समाज सेवी दानवीर जमींदार ठा. नारायण सिंह, पं. हरिशंकर शर्मा, प्रखर प्रशासक ठा. दलीप सिंह, इतिहासकार द्वय डा. ईश्वरी प्रसाद व डा. आर्शीवादी लाल श्रीवास्तव, साहित्यकार डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी, सत्यनारायण कविरत्न, डा. नत्थन सिंह, अमृतलाल नागर, डा. शिव मंगल सिंह 'सुमन', डा. विजयेंद्र स्नातक, डा. बरसानेलाल चतुर्वेदी, श्री शिव कुमार प्रेमी, जैसी विभूतियों का भी इस भूमि से ताल्लुक रहा है। इसके बाद भी यदि गंगा के किनारे से यमुना के तट तक भारतीय राजनीति का स्वरूप बिगड़ा है तो इसका कारण मूल्यों का ह्रास है। युवा तुर्क रहे पूर्व प्रधानमंत्री स्व. चन्द्रशेखर ने आपातकाल के अनुभवों पर ''जेल की डायरी'' लिखी किताब में लिखा है कि राजनीति या तो भ्रष्टाचारी को सुख देती है या फिर शत्रु का नाश कर देती है।

डा. दुर्गपाल सोलंकी ने कहा कि आज राजनैतिक प्रतिद्वंदिता गैंगवार में बदल चुकी है। जो सत्ता में होता है, वह व्यवस्था को अपने राजनैतिक विरोधियों के लिए नकेल के तौर पर इस्तेमाल करता है। नेताओं को आलोचना करने की आदत हो गई है, लेकिन सहने की आदत नहीं रही है। इंदिरा गांधी तक विरोध की मर्यादाएं थीं, लेकिन आज नहीं हैं। हम अतीत की बात करते थकते नहीं हैं, लेकिन वर्तमान का आकलन करने से डरते हैं।

मुख्य अतिथि एवं मां गायत्री शिक्षा योग संस्थान, पूर्वांचल के अध्यक्ष ठाकुर भगवती प्रसाद सिंह ने अपने सारगर्मित संबोधन में कहा है कि समाजवादी नेता एवं विचारक डा. राममनोहर लोहिया पं. नेहरू के खिलाफ चुनाव इसलिए लड़ते थे, क्योंकि वे विरोध को एक ताकत देना चाहते थे। डा. लोहिया ने अपना जीवन विपक्ष की राजनीति को ओजस्वी बनाने में लगा दिया। अब जाति, धन, बाहुबल, सम्प्रदाय, चरित्र हनन आदि नेताओं के साधन राजनीति के नायक हैं। श्री भगवती जी ने कहा कि सिर्फ गंगा–यमुना को राजनीति में खराबी के लिए दोष नहीं देना चाहिए; बल्कि इसमें दक्षिण भी कम दोषी नहीं है। अतः आवश्यकता और समय की पुकार है कि विशुद्ध राजनीतिक विचारधारा पर आधारित राजनीतिक दल की स्थापना हो जो वर्तमान भारतीय राजनीति को नई दिशा देकर जन–जन की आकांक्षाओं को पूरी करे, तभी नया हिन्दुस्तान बन सकेगा।

राजा महेंद्र प्रताप मिशन, वृंदावन के महासचिव राजेंद्र प्रताप सिंह प्रेमी ने कहा कि देश में युवाओं की आबादी 54 करोड़ लगभग है। इस शक्ति को राष्ट्र निर्माण की दिशा में जोड़ा जाये तो समृद्धशाली राष्ट्र के निर्माण की दिशा में हम आगे बढ़ सकते हैं। अखिल भारतीय जाट आरक्षण संघर्ष समिति के राष्ट्रीय महासचिव, प्रधानाचार्य बीरपाल सिंह ने कहा कि आज युवाओं के आदर्श क्रिकेटर और फिल्म स्टार हो गए हैं। ये आदर्शों का भटकाव है। युवाओं को सही दिशा व मार्ग दर्शक की भूमिका हमें देनी होगी। समाजवादी विचारक डा. दौलतराम चतुर्वेदी ने कहा कि आज हमारे कालेजों और विश्वविद्यालय में शिक्षा तो मिल रही है, लेकिन विद्या नहीं। हमें शिक्षा और विद्या का समन्वय कर मूलन आधारित शिक्षा देनी होगी, तभी राजनीति के क्षेत्र में युवाओं की स्थिति मजबूत होगी। किशोरीरमण पोस्ट–ग्रेजुएट कालेज, मथुरा के राजनीति विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो. सुधीर प्रताप सोलंकी ने कहा कि ज्ञान केवल भारत के पास है और सन् 2020 तक हमारा देश पूर्ण समृद्ध होकर जगत गुरू बनेगा। प्राध्यापक जतीश उपाध्याय ने कहा कि हिन्दुस्तान पहले शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों का निर्माण करता था, आज मैनेजरों का उत्पादन कर रहा है। हमें नगर–नगर और गांव–गांव जाकर अशिक्षा और कुरीतियों के खिलाफ लोगों को जाग्रत करना है, तभी राजनीतिक क्षेत्र में उत्साही एवं समर्पित कार्यकर्ता आ सकेंगे। समाजसेवी राजेश पचौरी ने कहा कि युवा तन का नहीं, मन की अवस्था का नाम है। जिस व्यक्ति में देश के प्रति कुछ करने की चाह होती है, वही युवा है। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तेज सिंह वर्मा 'सौनिगा' ने कहा कि राजनीति से नीति नदारद, रह गया केवल राज, अपनी–अपनी धुन पर बजा रहे, अपने–अपने साज। जब तक राज नेताओं में सेवा और

वह मनुष्य सचमुच बुद्धिमान है जो क्रोध की हालत में भी बुरी बात मुंह से नहीं निकालता। –सादी

समर्पण का भाव नहीं जगेगा, तब तक भारत का भाग्योदय मुश्किल है। अतः राजनीति में परिवर्तन जरूरी है। इतिहासविद कुंवर अरूण प्रताप 'चमन' ने व्यंग करते हुए कहा कि नेता को बादाम, जनता को मूंगफली, नेता को मिठाई, जनता को गुड़ की डली, अब तो बंद होनी ही चाहिए। ये रीति, राजनीति आखिर कब बनेगी सेवानीति? अतः अब नये राजनैतिक संगठन की परम आवश्यकता है।

अध्यक्षीय संबोधन में वरिष्ठ शिक्षाविद् डा. महीपाल सिंह ने कहा कि युवा अपनी शक्ति को पहचानें। राजनीति के नाम पर होता अब व्यापार, सेवा तो करनी नहीं, जेब खाली करे सरकार। युवाओं के आदर्श राजा महेंद्र प्रताप, भगत सिंह, महाराणा प्रताप, दीनबंधु सर छोटूराम, रानी लक्ष्मीबाई, महर्षि दयानंद सरस्वती, छत्तरपति शिवाजी, वीर गोकुला, गुरू गोविंद सिंह, विवेकानंद जैसे महापुरूष होने चाहिए। ये सर्वदा सार्थक एवं प्रासंगिक रहेंगे। इनके आदर्शों–विचारों के आधार पर ही हमारे युवा राजनीति में कीर्तिमान स्थापित कर सकेंगे।

प्रारंभ में प्रतिष्ठित समाजसेवी श्रीमती बिमलेश सिंह ने दीप प्रज्जवलित कर संगोष्ठी का शुभारंभ किया। अंकुर–अंकित ने राष्ट्र निर्माता नेताओं के चित्रों पर माल्यार्पण किया। संचालन प्रो. प्रमोदपाल ने किया। संयोजक इतिहासविद् कुंवर अरुण प्रताप 'चमन' ने परिचय, आभार व धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रीतिभोज के साथ, नारों व जयकारों ने धरती और आकाश गुंजायमान कर दिया।

वैवाहिक विज्ञापन

BRIDE WANTED

- SM4 Smart Jat boy 28/5'10" B.A. , PGDCA (70%) from P.U., Employee in Punjab Cooperative Bank as regular B.E.O. salary 35 thousand & father Haryana Govt. Employee. Avoid: Gill, Nadal, Bazar. Cont.: 09876875845
- SM4 Jat Boy 28/5'10" BA/PGDCA(70%) from P.U. Employed in Punjab Coop. Bank as Regular D.E.O. (Pay Rs. 35000/- p.m.) Father Hr. Govt. Officer. Own Flat at Panchkula. Tri-City match preferred. Avoid Gill, Nandal, Bazar- Cont. 09876875845.
- SM4 Smart Jat boy 30/5'10" B.A. , MBA, Business in Banking Sector Avoid: Malik, Goyat, Nandal Cont.: 9417528481
- SM4 Smart Jat boy 32/5'10", M.A., Ex. Army Officer, Now in Nabard. Avoid: Kundu, Gahlot, Lohan Cont.: 9466359345
- SM4 Smart Jat boy 28/5'8" B.Tech (Mech.) SAP Consult, Manesar, Ggn. Avoid: Saharan, Hooda, Gill Cont.: 9855605337
- SM4 Smart Jat boy 30/6' B.Tech (Elec.) Mahadev Company, Pkl. Avoid: Dahiya, Kundu, Singmar, Deswal Cont.: 9466449843
- SM4 Smart Jat boy 29/5'9" CA. Avoid: Punia, Khasa, Malik, Hooda. Cont.: 9592572222
- SM4 Smart Jat boy 26/5'10" B.Tech, Examinar in Custom. Avoid: Dangi, Kulharia, Kadian Cont.: 9468337669
- SM4 Smart Jat boy 28/5'8" B.A., LLB, Doing Practice. Avoid: Baliyan, Nehra, Kaliraman. Cont.: 9416914340
- SM4 Smart Jat boy 28/5'8" B.Tech (Computer Science), SLA in IT DAV Sec. 10 Chd. Avoid: Tomar, Malik, Saroha. Cont.: 9463742136
- SM4 Smart Jat boy 25/6' B.Tech (Civil.), Sale Officer. Avoid: Mor, Dahiya, Hooda. Cont.: 8146503753
- SM4 Smart Jat boy 28/6' BDS, Persuring MDS, Clinic in Sec. 21, Pkl. Avoid: Punnu, Gahlot, Malik. Cont.: 9888067864
- SM4 Smart Jat boy 36/5'9" B.A., PGDCA, LDC in HBVN Sector 6 Panchkula. Avoid: Kadian, Malik, Khatri. Cont.: 9468089442
- SM4 Smart Jat boy 28/6'3" B.A., Private Job. Avoid: Dahiya, Chahal, Beniwal. Cont.: 9896507808
- SM4 Smart Jat boy 30/5'5" B.A., Hotel Management Course, Private Job. Avoid: Dahiya, Dhankhar, Gahlawat. Cont.: 9896141579
- SM4 Smart Jat boy 25/6' B.Tech. (Civil) EE Civil. Avoid: Phogat, Kadian, Ahlawat. Cont.: 9463961354
- SM4 Smart Jat boy 25/5'6" BAMS, Own Practice. Avoid: Malik, Dahiya, Nandal. Cont.: 9501134514
- SM4 Smart Jat boy 24/5'9" B.Tech (IT), PO in UBI Mumbai. Avoid: Rathee, Kalkal, Kharab. Cont.: 9041696871
- SM4 Smart Jat boy 26/5'11" MBA, MNC at IT Park Chd. Avoid: Dhankhar, Punia, Sahrawat. Cont.: 9815300630
- SM4 Smart Jat boy 26/5'10" B. Tech., Private Job at Derabassi. Avoid: Kajla, Kaliraman, Khaliya. Cont.: 9915791810
- SM4 Smart Jat boy 33/5'10" MBBS, at Shima as MO. Avoid: Chikkara, Duhan, Sangwan. Cont.: 9216466612
- SM4 Smart Jat boy 27/5'10" B.Tech., MNC at Manesar. Avoid: Malik, Dhull, Sihag. Cont.: 9466949741
- SM4 Smart Jat boy 40/5'8" PHD Psychology, Bank of America. Avoid: Lohan, Lather. Cont.: 9812315615
- SM4 Smart Jat boy 37/5'4" ITI Elect., Electrician. Avoid: Sangwan, Dabas, Sheoran. Cont.: 9896445446
- SM4 Smart Jat boy 27/5'7" B.Ed., Yoga, BPED, MA Pol. Science, Teacher Physical Education. Avoid: Malik, Khatri, Dahiya. Cont.: 9463491567

GROOM WANTED

- SM4 Smart Jat girl 24/5'4" B.A., Presently 2nd year JBT. Avoid: Redhal, Chahal, Dhanda, Dalal. Cont.: 09023032555
- SM4 Jat Girl 23/5'3" M.B.A. Employed in MNC at Mumbai with Rs. 4.50 Lakh package PA. Father & Mother in Government job. Avoid Gotras: Mor, Nain, Gill. Cont.: 09872330397, 09915711451
- SM4 Jat Girl (DOB 18.10.84) 31.10/5'3" M.Com. Passed Computer Course. Avoid Gotras: Kadian, Malik, Khatri. Cont.: 09468089442
- SM4 Jat Girl 28/5'3.6" M.Sc (Math), B.Ed. Working in a reputed private School. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 09354839881
- SM4 Jat Girl (DOB 28.11.93) 22.10/5'1" B.A. from P.U. Chandigarh. Doing practice for Stenographer. Avoid Gotras: Beniwal, Segwal, Kadian, Kuhad, Kaliraman. Cont.: 08591887304
- SM4 Jat Girl (DOB 29.02.92) 24.2/5'4" M.Sc. Physics from P.U. Chandigarh. Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Sinhmar. Cont.: 09463330394
- SM4 Jat Girl (DOB 04.11.90) 25.9/5'2" B.A. B.Ed. Employed as Officer in Haryana government. Avoid Gotras: Hooda, Kundu, Bhanwala. Cont.: 09729235545
- SM4 Jat Girl (DOB13.09.87) 28.10/5'5" M.Tech. Employed as Lecturer in a reputed College at Sampla, Distt. Rohtak (Haryana). Avoid Gotras: Pawaria, Nandal, Ahlawat. Cont.: 09996060345
- SM4 Jat Girl 27.5/5'7" B.A. (Hons.) MA English, M.Phill. B.Ed. NET qualified, Employed as J.B.T. Teacher in U.T. Chandigarh. Avoid Gotras: Malhan, Kadian, Chahar. Cont.: 09467394303
- SM4 Jat Girl (DOB 05.09.91) 24.10/5'6" M.Tech (CSE) Employed in a University. Avoid Gotras: Malik, Hooda, Rana. Cont.: 07696844991
- SM4 Jat Girl (DOB 20.09.91) 25/5'6" M.Tech (ESE) Avoid Gotras: Panwar, Deswal, Ahlawat. Cont.: 08053825053, 09813262849
- SM4 Jat Girl (DOB 07.02.90) 25/5'10" B.Tech. (ESE) M.Tech (ESE) from M.D.U. Rohtak. GATE qualified. Avoid Gotras: Kadian, Rathee, Sangwan. Cont.: 08447796371

सेवा के लिए पैसे की जरूरत नहीं होती, जरूरत है अपने संकुचित विचार छोड़ने की। –विनोबा भावे

- SM4 widow issue less Jat Girl (DOB 02.10.80) 35.5/5'3" MSc., M.Phill, B.Ed. Employed as Junior Lecturer in Haryana Government. Avoid Gotras: Nandal, Sehrawat, Dalal. Cont.: 08570032764
- SM4 Jat Boy (DOB 21.04.90) 25.6/5'9" B.Tech. Working as Assistant in Haryana Civil Secretariat in Excise & Taxation Deptt. Only son, Father and mother Gazetted Officers in Haryana government. Avoid Gotras: Mor,Siwach, Singroha. Cont.: 09988701460
- SM4 Smart Jat girl 26/5'4" B.Com., M.Com, B.ed. Avoid: Sinver, Saharan, Jyani. Cont.: 9417495950
- SM4 Smart Jat girl 31/5'3" B.A., B.ed., M.A. Eng., M.ed. Avoid: Rajyan, Malik, Kalkal. Cont.: 9911937646
- SM4 Smart Jat girl 22/5'3" B.Com., M.Com. Avoid: Sheoran, Soora, Phogat. Cont.: 9914411061
- SM4 Smart Jat girl 28/5'3" BCA, MCA, B.ed. Avoid: Kadian, Lochabh, Birjaniya. Cont.: 9417070518
- SM4 Smart Jat girl 30/5'5" M.A. (Sociology). Avoid: Pahal, Khatri, Dahiya. Working in Associate Indus Tower Ltd. GGN. Cont.: 9876662178
- SM4 Smart Jat girl 27/5'3" GNM 3-6 Year Course. Working as Staff Nurse in Govt Hospital in sector-6, Panchkula Avoid: Dahiya, Kajla, Ahlawat. Cont.: 9463881657
- SM4 Smart Jat girl 26/5'4" M.A., M.Phil, Net, B.ed, CTET, HTET. Avoid: Duhan, Sehrawat, Kundu. Cont.: 9416620245
- SM4 Smart Jat girl 27/5'8" C.A. Working in CA C/o J.K. Jain Associate. Avoid: Thalar, Beniwal, Pachar. Cont.: 9915577587
- SM4 Smart Jat girl 35/5'6" BDS. Working in Govt. job in Haryana. Avoid: Malik, Mann, Sihag. Cont.: 9417383946
- SM4 Smart Jat girl 25/5'4" B.A. Working as a Steno Typist in Distt. Court, Jind. Avoid: Solath, Dalal, Dhillon. Cont.: 9878983344
- SM4 Smart Jat girl 30/5'2" M.Sc. (Hons.) CAIIB, HTET. Working in officer Scale-1, Pb & Sind Bank. Avoid: Sangwan, Khatri, Siwatch. Cont.: 9466951525
- SM4 Smart Jat girl 24/5'4" B.Tech, MBA 1st Year. Avoid: Kharb, Rathi, Dagar. Cont.: ----------
- SM4 Smart Jat girl 23/5'6" M.A. Hindi. Working as a Teacher in Private School. Avoid: Redhu, Beniwal, Sheoran. Cont.: 9781271018
- SM4 Smart Jat girl 30/5'6" MBA, M.Com. Avoid: Roparia, Kharinta, Ghanghas. Cont.: 9417350856
- SM4 Smart Jat girl 31/5'4" B.Tech., MBA. Self Business. Avoid: Roparia, Ghanghas, Nain. Cont.: 9876224999
- SM4 Smart Jat girl 25/5'3" B.Com, C.A.. Working as a CA in Infosys. Avoid: Dahiya, Mann, Rathi, Hooda. Cont.: 9815005193
- SM4 Smart Jat girl 26/5'5" M.E. (ECE). Working as a Q.A. MNC, GGN. Avoid: Malik, Kadian, Hooda. Cont.: 9463961233
- SM4 Smart Jat girl 23/5'6" B.Sc., B.ed., M.Sc. Avoid: Sangwan, Kalhen, Sahrawat. Cont.: 9417787441
- SM4 Smart Jat girl 27/5'3" B.Sc. M.Sc. (Hons). Working in GGC, Pkl (Ext.). Avoid: Sangwan, Lathwal, Lakra. Cont.: 7837613988
- SM4 Smart Jat girl 24/5'5" B.Tech. (ECE). Working as a Assistance Engg. in Accenture MNC at Manesar (Ggn). Avoid: Bisla, Dhillon, Malik. Cont.: 9417391563
- SM4 Smart Jat girl 32/5'3" B.Com. Working in HVPN, Sector-16, Panchkula. Avoid: Kadian, Malik, Khatri. Cont.: 9468089442
- SM4 Smart Jat girl 26/5'3" JBT, B.ed. B.A., M.A. Working as a Teacher in Private School. Avoid: Phogat, Dahiya, Dalal. Cont.: 9312348438
- SM4 Smart Jat girl 27/5'3" B.A., Degree in Mass Communication. Working in Temp. Job in Tribune. Avoid: Nain, Dalal, Kundu. Cont.: 9896214981
- SM4 Smart Jat girl 26/5'8" B. Arch., M.Arch. Working as a Astt. Manager in Mindtree Company Banglore. Avoid: Nain, Hooda, Dalal. Cont.: 9814538682
- SM4 Smart Jat girl 32/5'3" M.A. Hindi, ITI Computer, Shorthand. Avoid: Garodia, Lamba, Sangwan. Cont.: 9888690073
- SM4 Smart Jat girl 27/5'3" MCA. Working as a Data Manager in PGI Chandigarh. Avoid: Sheoran, Punia, Sangwan. Cont.: 9988359360
- SM4 Smart Jat girl 23/5'3" JBT, Steno Typist. Avoid: Gill, Sheoran, Kundu. Cont.: 9041032323
- SM4 Smart Jat girl 28/5'2" B.A., M.A. (Eco.) Phd (Perusing). Working as a Astt. Prof. in DAV College Chd. (Cont). Avoid: Dahiya, Saharwat, Rana. Cont.: 998844040
- SM4 Smart Jat girl 24/5'3" B.Com, JBT, CTET, HTET Pursuing M.Com. Avoid: Dahiya, Mann, Hooda. Cont.: 9417279570
- SM4 Smart Jat girl 24/5'5" M.Sc. (Physics), B.ed. Avoid: Gahlan, Chhikara, Boora. Cont.: 9467630182
- SM4 Smart Jat girl 25/5'5" B.Tech. (ECE) M.Tech Final Year. Avoid: Dahiya, Jaglan, Khatri. Cont.: 9463882581
- SM4 Smart Jat girl 32/5'0" LLB, LLM, MBA. Avoid: Balhara, Dahiya, Sangwan. Cont.: 9051655056
- SM4 Smart Jat girl 28/5'4" MCA. Self Business. Avoid: Khatkar, Gill, Mor. Cont.: 7696811339
- SM4 Smart Jat girl 26/5'7" B.Sc. Nursing. Working Nursing Tutor at MAMC Agroha. Avoid: Malik, Siwatch, Sindhu. Cont.: 9569854549
- SM4 Smart Jat girl 26/5'6" M.Sc. Banking & Finance. Working in HDFC Bank. Avoid: Dhankhar, Hooda, Dahiya. Cont.: 9990298588
- SM4 Smart Jat girl 25/5'4" BDS. Working Private Job. Avoid: Dhankhar, Dalal, Dahiya. Cont.: 9990298588
- SM4 Smart Jat girl 25/5'3" M.Sc. (Chemistry), B.Sc. Avoid: Kadian, Sarhaya, Dhankhar. Cont.: 8901495475
- SM4 Smart Jat girl 27/5'6" BDS. Working in GMGH 32, Chandigarh. Avoid: Baliyan, Mann. Cont.: 8566011020
- SM4 Jat Girl (DOB 04.08.90) 25.8/5'4.5" M.Sc. from P.U. Chandigarh. Employed as Software Developer (Alchemist IT Company Chandigarh). Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Sinhmar. Cont.: 09463330394
- SM4 Smart Jat girl 26/5'5" MCA. Working in IT Park Chandigarh. Avoid: Dalal, Dagar, Sinhmar. Cont.: 9463330394
- SM4 Smart Jat girl 24/5'3" JBT, CTET, HTET, BA, MA Eng.. Avoid: Sahrawat, Dabas, Kadian. Cont.: 9501554632
- SM4 Smart Jat girl 26/5'6" B.Tech. Computer. Working in Core Eng. in Erricson, Mohali. Avoid: Sahu, Tomar, Malik. Cont.: 9465109422
- SM4 Smart Jat girl 27/5'2" B.ed, MA History. Avoid: Thakran, Saharawat, Dahiya. Cont.: 9996480088
- SM4 Smart Jat girl 26/5'4" B.ed, M.Com. Working as a Guest Teacher in Delhi Admn. Avoid: Thakran, Saharawat, Dahiya. Cont.: 9996480088
- SM4 Smart Jat girl 27/5'3" B.Com. Working in Maruti, Delhi. Avoid: Dahiya, Rathee, Lamba. Cont.: 9988099453
- SM4 Smart Jat girl 23/5'3" M.Sc Human Dev. PG Diploma Child Guidance. Avoid: Phogat, Dhillon, Panghal. Cont.: 9914416700
- SM4 Smart Jat girl 30/5'4" MA Eng., B.ed. Working Female Supervisor in Haryana. Avoid: Dangi, Sangwan, Pilania. Cont.: 9915012369
- SM4 Smart Jat girl 26/5'3" G.N.M. Working as GNM Sect. in 16 Hospital Chandigarh. Avoid: Malik, Guliya, Tomar. Cont.: 9463797321
- SM4 Smart Jat girl 25/5'6" B.Tech. Service in Pune. Avoid: Dahiya, Kadian, Kodan. Cont.: 9969651665
- SM4 Smart Jat girl 24/5'2" B.Tech. Avoid: Pannu, Sindhar, Laura. Cont.: 9467525616
- SM4 Smart Jat girl 27/5'3" B.Tech., M.Tech. Working as a P.O. in IDBI bank, Mother class 1 officer & father class 1 officer (Retd.). Avoid: Pannu, Gill, Dhull. Cont.: 09416865888
- SM4 Smart Jat girl 26/5'5" B.Com, M.Com, B.ed. Working as a teacher in Private school at Panchkula. Avoid: Tawar, Jakhal, Sheoran. Cont.: 08284050424

कैसे होंगे प्रभु प्रसन्न

नरेन्द्र आहूजा

आजकल मनुष्य अपने प्रत्येक धार्मिक दिखाई देने वाले आडम्बर के पीछे प्रभु को प्रसन्न करने का कारण बताता है। प्रभु को प्रसन्न करने के लिए भूखे रहकर व्रत रखना, किन्हीं प्रचलित धर्मस्थलों की तीर्थ यात्रा, तथाकथित धार्मिक अनुष्ठान करना, दिवस एवं समय विशेष पर किसी नदी विशेष में स्नान करना, नाम जाप करना, स्वयं को ईश्वरीय अनुकम्पा प्राप्त प्रतिनिधि घोषित कर चुके कथावाचकों गुरूओं के डेरों पर उनकी सेवा करना परन्तु प्रश्न पैदा होता है कि क्या प्रभु इन पाखडों से प्रसन्न होते हैं। यदि नहीं तो फिर प्रभु को प्रसन्न करने का क्या साधन है और प्रभु को प्रसन्न करने का क्या लाभ है?

प्रभु कैसे प्रसन्न होंगे इसका साधन खोजने से पूर्व हमें प्रभु की प्रसन्नता का पैमाना जानना होगा। मनुष्य की भौतिक प्रगति से हम इस बात का आकलन करते हैं। यदि किसी के पास धन दौलत कोठी गाड़ियां भौतिक सुख सम्पदा है तो हम इस बात को मानते हैं कि ईश्वर की उस पर बड़ी कृपा है और शायद इन्हीं भौतिक सुखों की प्राप्ति की इच्छा से ही हम यह धार्मिक आडम्बर पाखंड अंध–विश्वास प्रभु को प्रसन्न करने के उपाय के रूप में करते हैं। भौतिक प्रगति की तीव्र लालसा, अंधानुकरण इन अंधविश्वासों पाखंडों आडम्बरों के शार्टकट मारने को विवश कर देती है। हालांकि यह शार्टकट मनुष्य के जीवन या जीवन में सफलता को अंत में कटशार्ट ही करते हैं।

यदि हम जीवन में सफलता को ही प्रभु की प्रसन्नता का पर्याय मानें तो इसका साधन जानने के लिए कर्म फल सिद्धान्त को जानना मानना पड़ेगा। हमें हमारी नियति प्रारब्ध वा किस्मत न्यायकारी परमपिता परमेश्वर सर्वव्यापी दृष्टा के रूप में हमारे सभी कर्मों का ब्यौरा साक्षी के रूप में रखते हुए नियति या प्रारब्ध के रूप में देते हैं अर्थात प्रत्येक मनुष्य स्वयं अपना भाग्य विधाता है और अपने कर्मों की लेखनी से ही अपनी नियति लिखता है। मनुष्य स्वतंत्र कर्ता होने के कारण अपने द्वारा किए गए प्रत्येक कर्म का फल अवश्य भुगतना पड़ता है। यदि हम सद्कर्म करेंगे निष्काम भाव से परोपकार के यज्ञीय कार्य करेंगे तो निश्चित रूप से न्यायकारी ईश्वर की न्याय व्यवस्था के अधीन उन सद्कर्मों के फलस्वरूप अच्छी नियति किस्मत के भागी बनेंगे या दूसरे शब्दों में कह सकते है कि यदि हम जीवन में स्थायी सफलता पाना चाहते है तो हमें सद्कर्म करने होंगे अर्थात प्रभु की प्रसन्नता का एक मात्र साधन मनुष्य के स्वयं के सद्कर्म हैं।

इससे यह सिद्ध होता है कि ईश्वर न तो हमारे द्वारा अपनी स्तुति का भूखा है और न ही धार्मिक आडम्बरों पाखंडों अंविश्वासों से प्रसन्न होता है। ईश्वर की स्तुति अर्थात ईश्वर के सच्चे स्वरूप गुणों का गान हम अपने लाभ के लिए अर्थात उन गुणों को अपने जीवन धारण करने की इच्छा से करते हैं। यदि हम ईश्वर को न्यायकारी दयालु सबका पालक उत्पत्तिकर्ता आदि बताते है। तो हम यह भी विचार करें कि क्या हम अपने जीवन में दूसरों के प्रति दयालुता दिखाते हैं क्या हम अपने आचरण से न्याय करते हैं या फिर किसी स्वार्थ के वशीभूत पक्षपात अन्याय करते हैं। हम कितने गरीबों दुखियों का पालन कर रहे हैं। ईश्वर की सच्ची स्तुति केवल ईश्वरीय सत्य गुणों का गायन नहीं अपितु उन गुणों को अपने जीवन में धारण करने का प्रयास करना हैं। यदि हम सच्चे मन से ईश्वर की स्तुति कर उन गुणों को धारण करते हुए जीवन में सद्कम परोपकार के यज्ञीय कार्य निष्काम भाव से करेंगे तो हम निश्चित रूप से प्रभु को प्रसन्न कर सकते हैं। केवल पाखंडों अंधविश्वासों आडम्बरों से प्रभु कभी प्रसन्न नहीं होते।

हमे जिन पर गर्व है

Varnika Aditi D/o Sh. Ajay Choadhary Advocate, Punjab & Haryana High Court Chandigarh and grand daughter of Sh. C.P. Choadhary, Sr. Advocate of Hansi Village Sisai Kaliraman, Teh. Hansi, Distt. Hisar now R/o H.No. 674, Sector-4, Panchkula got 95% marks in +2 of Medical Stream, stood 1st in Bhawan Vidhalya Sector-26, Chandigarh and third in Tricity in C.B.S.E. exams-2016 and now got Admission to Govt. Medical College Sector-32, Chandigarh in MBBS for Batch 2016.

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।